P.G.
SEM-III
Paper-14

डॉ० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

प्रश्न(3) साधारणीकरण से तात्पर्य स्पष्ट करते हुए संस्कृत और हिन्दी आचार्यों के साधारणीकरण संबंधी चिंतन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:- 'साधारण' शब्द 'धारण' (धृ धातु से निष्पन्न) में सा उपसर्ग लगाकर बनाया गया है - समानं धारणं यस्य तादृशं भवति।' अर्थात अनेक चित्तों द्वारा जो समान रूप से धारण किया जाता है, वह मनस व्यापार साधारण है। पतंजल योगसूत्र के भाष्यकार ने 'साधारण' शब्द की परिभाषा करते हुए कहा है। 'बहुचित्तालम्बनो भूतमेकम वस्तु साधारणम। तत्खलु नेक चित्तपरिकल्पितम नाप्यनेक चित्तपरिकल्पितम किन्तु स्वप्रतिष्ठम। अर्थात अनेक चित्तों के आलम्बन एक वस्तु को साधारण कहा जाता है। न वह एक विज्ञान से धारण किया जाता है बल्कि उसका धारण अपने ही ज्ञान से है।

साधारणीकरण से भट्टनायक का तात्पर्य :-

(1) साधारणीकरण विभावादि व्यापार का होता है।

(2) भावकत्व-व्यापार का प्राण है - साधारणीकरण।

(3.) भावकत्व व्यापार द्वारा भाव्यमान स्थायी भाव ही रस रूप में परिणत हो जाता है।

(4) साधारणीकरण रसास्वाद से पूर्व की प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो रस के विभिन्न अवयवों को अपने अपने वैशिष्ट्य से मुक्त कर आस्वाद्य रूप में प्रस्तुत कर देती है।

(5) अभिधा व्यापार की सीमा सामान्य पद-पदार्थ तक ही है। इससे आगे के कार्य भावकत्व तथा भोजकत्व व्यापार के द्वारा होते हैं। कवि पूरे प्रयास से भाषा को दोषों से बचाता है तथा गुणों अलंकारों से अलंकृत कराता है।

(6) विभावादि के साधारणीकरण का सहृदय की चेतना पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसे ही भट्टनायक 'निज-मोह-संकटता निवारण' कहते हैं।

(7) भावकत्व व्यापार तथा साधारणीकरण एकदम पर्यायवाचक ही है। साधारणीकरण स्वयं में भावकत्व व्यापार का एक अंग है।

काव्य की भावना द्वारा पाठक या श्रोता का भाव की सामान्य भूमि पर पहुँच जाना ही साधारणीकरण है। किसी काव्य के पढ़ते समय अथवा नाटक देखते समय पाठक और दर्शक इतने तन्मय हो जाते हैं कि वे स्वयं की भावना से दूर हो काव्यभावना के अनुकूल व्यवहार करते हैं। इसी दशा का नाम साधारणीकरण है। साधारणीकरण में श्रोता या पाठकगण एक साथ एक भावना का ही अनुभव करते हैं।

संस्कृत आचार्यों के साधारणीकरण संबंधी चिंतन :—

(1) अभिनवगुप्त :— अभिनवगुप्त ने साधारणीकरण सिद्धांत को व्यापक परिवेश और अधिक मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया उनके अनुसार साधारणीकरण के दो स्तर हैं पहले स्तर पर विभावादि का व्यक्ति-विशिष्ट सम्बन्ध समाप्त हो जाता है और दूसरे स्तर पर सामाजिक का व्यक्तित्व बंधन छूट जाता है। अर्थात् विभावादि के साथ स्थायी भाव का साधारणीकरण होता है और साथ ही सामाजिक की अनुभूति का साधारणीकरण होता है। उन्होंने सामाजिक की वासना को स्वीकृति देकर स्थायी भाव का साधारणीकरण सिद्ध किया।

(2) आचार्य विश्वनाथ :— विश्वनाथ के अनुसार पाठक या प्रमाता का आश्रय के साथ अटूट संबंध स्थापित हो जाता है। अर्थात साधारणीकृत स्थिति में रत्यादि स्थायी भाव का उसी रूप में अनुभव होने लगता है और इस रसानुभूति के समय 'परस्य न परस्येति ममेति न ममेतिवा' यह दूसरे का है यह दूसरे का नहीं है यह मेरा है यह मेरा नहीं है इस प्रकार का भेद नष्ट हो जाता है।

(1) विभावादि के विभावन-व्यापार के कारण सहृदय या प्रमाता आश्रय से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इस प्रकार सामान्य जन देव महापुरुष आदि के कार्यों तथा अनुभूतियों का आस्वादन कर सकता है। देवताओं महापुरुषों के तदात्म्य साधारणीकरण के परिणामस्वरूप घटित होता है।

(2) काव्यास्वाद के समय काव्य के विभावादि का अपने पराये की भावना का परिहार हो जाता है' उन्होंने कहा कि '
"परस्य न परस्येति ममेति न ममेति च
तदास्वादे विभावादि: परिच्छेदो न विद्यते।"

(3) पंडित राज जगन्नाथ :—

पंडितराज जगन्नाथ के मत में न तो साधारणीकरण कोई वस्तु है न किसी का किसी के साथ साधारणीकरण होता है? अपितु सहृदय सामाजिक के मन में रंगमंचीय संपर्क से दोष उत्पन्न हो जाता है जिससे रसादि के साथ तादात्म्य कर सीता आदि के साथ वह रसमग्न हो जाता है।" पण्डित राज के अनुसार - "काव्यानुभूति भ्रमजनित है अत: साधारणीकरण पारमार्थिक रूप में हो ही नहीं सकता क्योंकि वस्तु सदा विशेष में रहती है। नट अपनी चेतना को भूल नहीं सकता क्योंकि वस्तु सदा विशेष में रहती है। अत: तात्विक रूप में साधारणीकरण संभव नहीं है। यह भ्रम है और काव्य भी भ्रम ही है।" इस मत में भी प्रकारान्तर में विशेषकर आश्रय का साधारणीकरण है चाहे दोष या भ्रम से ही क्यों न हो क्योंकि बिना तादात्म्य के रस की अवस्था नहीं बन पाती।

हिन्दी के आचार्यों के साधारणीकरण संबंधी चिंतन

(1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :— आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साधारणीकरण को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं— जब तक किसी भाव का कोई इस रूप में नहीं लाया जाता कि वह सामान्यत: सबके उसी भाव का आलम्बन हो सके, तब तक उसमें रसोद्बोधन की पूर्ण शक्ति नहीं आती। इसी रूप में लाया जाना हमारे यहाँ साधारणीकरण कहलाता है। साधारणीकरण का स्वरूप स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं— साधारणीकरण का अभिप्राय यह है कि पाठक या श्रोता के मन में व्यक्तिविशेष या वस्तुविशेष आती है वह जैसे काव्य में वर्णित आश्रय के भाव का

आलम्बन होता है, वैसे ही सब सहृदय पाठकों या श्रोताओं के गात का आलम्बन हो जाती है।" तात्पर्य यह है कि आलम्बन रूप में प्रतिष्ठित व्यक्ति, समान प्रभाववाले कुछ धर्मों की प्रतिष्ठा के कारण सबके भावों का आलम्बन हो जाता है।

डा० नगेन्द्र :- डा० नगेन्द्र शुक्ल जी के 'काव्यगत आश्रय से तादात्म्य तथा आलम्बन या आलम्बनत्व धर्म का साधारणीकरण इन मतों का खण्डन किया है तथा वे कहते हैं कि विभावादि की अपेक्षा कवि की अनुभूतियों का साधारणीकरण होता है। डा० नगेन्द्र का कथन है कि साधारणीकरण का अर्थ है → कवि की अनुभूतियों का साधारणीकरण। कवि अपनी अनुभूति के साथ अपना रस भी सहृदय के पास भेजता है। अतः रस की स्थिति सहृदय के हृदय में मानना उतना ही अनिवार्य है। जितना सहृदय के हृदय में मानना।"

बाबू गुलाबराय :- बाबू गुलाबराय के मत में पाठकों के व्यक्तित्व के कुछ बन्धनों को तोड़ने के कारण, कवि का लोक प्रतिनिधि होने के कारण आलम्बन सर्वजन सुलभ सम्बन्धों में आने के कारण साधारणीकृत हो जाता है। वे नाटकीय प्रपंच नाटककार और प्रेक्षक आदि सभी का साधारणीकरण आवश्यक मानते हैं।

आचार्य केशव प्रसाद मिश्र ने साधारणीकरण का सम्बन्ध योग की 'मधुमती भूमिका' से जोड़ा है। मिश्र की धारणा का प्रभाव आलोचक श्यामसुन्दरदास पर पड़ा है। श्यामसुन्दरदास ने लिखा है कि— "जब तक सांसारिक वस्तुओं का हमें अपर प्रत्यक्ष होता रहता है तब तक शोचनीय वस्तु के प्रति हमारे मन में दुःखात्मक शोक अथवा अभिनन्दनीय वस्तु के प्रति सुखात्मक हर्ष उत्पन्न होता है परन्तु जिस समय हमको वस्तुओं का प्रत्यक्ष होता है उस समय शोचनीय तथा अभिनन्दनीय सभी प्रकार की वस्तुएँ हमारे केवल सुखात्मक भावों का आलम्बन बनकर उपस्थित होती हैं। उस समय दुःखात्मक क्रोध, शोक आदि भाव अपनी लौकिक दुखात्मकता छोड़कर अलौकिक सुखात्मकता धारण कर लेते हैं।